Mind and Society ISSN 2277-6907
Vol.07, No. III & IV , Sep. & Dec. 2018 Page 69 to 73

टीका साहित्य और टीकाकार शंकर कवि

*डॉ. सुषमा तिवारी

Received	Reviewed	Accepted
30 Oct. 2018	10 Nov. 2018	20 Nov. 2018

पाठालोचन का व्यावहारिक रूप से संबंध किसी भी ग्रंथ के पठन या पाठ से है। डॉ. पोस्टगेट के अनुसार– किसी रचना के मूल पाठ के स्वरूप निर्धारण के प्रसंग में स्वीकृत निपुण व विधि निहित प्रक्रिया को पाठालोचन कहते है। पाठ से हमारा आशय किसी भाषा में रचित ऐसे अर्थपूर्ण ग्रन्थ से है, जो अन्वेषक को न्यूनाधिक रूप से ज्ञात है, और जिसके विषय में निश्चयात्मक रूप से कुछ कहा गया हो या कहा जा सकता है। अतः ऐसी स्थिति में पाठालोचक के सम्मुख उपस्थित होने वाली समस्याओं का स्वरूप स्पष्ट करने हेतु भारत में जिस काल में पाठों का प्रेषण होता था, उस काल से मुद्रण कला के आविर्भाव के काल तक के इतिहास से परिचय पाना अत्यन्त आवश्यक है। पाठालोचन का मूल उद्देश्य किसी हस्त लिखित ग्रन्थ प्रलेख में उपलब्ध साक्ष्य का निर्वाचन एवं नियंत्रण करना है, जिससे मूल प्राचीन ग्रंथ तक पहुंचा जा सके और पाठ की प्रामाणिकता सिद्ध की जा सके अथवा जहां तक संभव हो सके, ग्रन्थकर्ता के अभीष्ट शब्दों का पता लगाया जा सके। क्योंकि विभिन्न कारणों से अभीष्ट शब्द वाक्य नहीं हो पाते। दूसरे शब्दों में कह सकते है कि कौशल युक्त एवं वैज्ञानिक प्रणाली से जहां तक संभव हो सके, किसी पाठ का उसके मूल स्वरूप के रूप निर्धारण करने में मानव बुद्धि का उपयोग करना ही पाठालोचन का मूल उद्देश्य है। मूल स्वरूप से हमारा आशय ग्रंथकर्ता द्वारा मूल रूप लिखित ग्रंथ के स्वरूप से है। इस प्रकार की पाठ का निर्धारण का कार्य आलोचनात्मक संशोधन कहलाता है। इस तरह पाठालोचन से सही शब्दों अर्थो का उचित ज्ञान हो जाता है और मूल स्वरूप को जानने के लिए ग्रंथों की खोज हो जाती है। इसके साथ ही ग्रन्थकर्ता एवं टीकाकार के अभीष्ट शब्दों का ज्ञान, साहित्य प्रेमियों को हो जाता है। पाठालोचन विभिन्न प्रकार के होते है जो कि संकेत टीका में दृष्टिगोचर होता है।

संस्कृत सांहित्य का विशाल सागर रत्नों से भरा हुआ है। वैदिक काल से लेकर आज तक हजारों ग्रंथ लिखे गये। संसार का शायद ही ऐसा कोई विषय होगा, शायद ही कोई विधा होगी जिस पर भारतीय मनुष्यों ने अपनी लेखनी न चलाई हो। चौसठ कलाये इसके लिए विख्यात है। उनको हम विभिन्न विधाओं का नाम भी दे सकते है।

जब भाषा का प्रवाह निरन्तर आगे बढ़ता रहता है, उस समय साहित्य प्राचीन होता जाता है और उसको समझना कठिन हो जाता है। उसी को समझाने के लिए व्याख्या टीका, अनुवाद, भाषा आदि की आवश्यकता पड़ती है। जिनके द्वारा साहित्यकार या शास्त्रकार की भावनाओं को समझने में सहायता मिलती है। अनेकोबार तो ऐसा भी देखने में आया है कि शास्त्रकार स्वयं अपनी बात को भलीभांति समझाने के लिए एक टीका की रचना कर जाता है। उसे हम टीका कहे या भावनाओं का विशुद्विकरण कहें उदाहरण के लिए वामन का काव्यालंकार, मम्नट का काव्य प्रकाश। कई बार तो समकाल में भी टीकायें व्याख्याये करनी पड़ती है। लेखक या रचनाकार अपने नवीन सिद्धांतों को अपनी रचनाओं को सूत्र रूप में कहता है, किन्तु उसके अनुयायी उसे विशुद्ध रूप में प्रस्तुत करते हैं।

संस्कृत साहित्य में टीकाओं का विशिष्ट महत्व हैं। वेद से लेकर आधुनिक साहित्य तक सभी में टीकायें उपलब्ध हो

**विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, शासकीय कमला देवी राठी महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजनांदगांव (छ.ग.)*

जाती है। संस्कृत साहित्यकारों में विशेषतः गथकारों में बाणभट्ट का प्रमुख स्थान है। ''गधं कवीनां निकषं वदन्ति'' संस्कृत शास्त्र में गद्य साहित्य वैसे भी कम मिलते है और उस गद्य साहित्य में भी टीकायें और भी अधिक दुर्लभ है। इस भांति शंकर कवि कृत संकेत टीका का महत्व अति महत्वपूर्ण हो जाता है।

बाणभट्ट की कादम्बरी एक कल्पित रचना है। इसके सभी पात्र कल्पित है, किन्तु हर्षचरित एक ऐतिहासिक रचना हैं। इसी के आधार पर प्राचीन भारत का यह इतिहासकारों द्वारा यथावत् लिख दिया गया है, इसलिए उस पर की गई टीकाओं का महत्व बढ़ जाता है। महाकवि बाणभट्ट कृत हर्षचरित (आस्यायिका) पर संकते टीका लिखी गई है। जिनमें मैंने शंकर कवि कृत संकेत टीका को आलोचनात्मक अध्ययन के लिए उपयुक्त माना है। हर्षचरित पर अनेक टीकाकारों ने टीका लिखी है, जो कि विभिन्न प्रकाशनो कोशो, पुस्तकों से ज्ञात होता हैं कुछ टीका व टीकाकारों के संबंध में आवश्यक जानकारी उपलब्ध हो सकी है, लेकिन कतिपय टीकाकारों के बारे में किंचित मात्र भी ज्ञान नहीं हो सका है। जैसे रंगनाथ–टीका मर्मावबोधिनी, रूरयक ने हर्षचरित वार्तिक लिखा है।

मैंने अपने उक्त शोध अध्ययन में टीकाकार की टीका में कई तरह के पाठभेद पाठान्तर प्राप्त हुए है। उसे मैं शंकर कृत पाठालोचन के रूप में व्यक्त करते हुए उन पाठभेदों को प्रस्तुत कर रही हूं।

शंकर कृत पाठालोचन

संस्कृत वाङ्मय के प्रायः समस्त ग्रंथ पाठभेद की समस्या से युक्त है। प्राचीन काल में, जबकि मुद्रण कला का अविष्कार नहीं हुआ था, मूल ग्रंथों की हस्तलिखित प्रतिलिपियां तैयार की जाती थी। यद्यपि लिपिकार शुद्ध लेखन में सतत् सचेष्ट रहते थे, तथापि अशुद्धियों का हो जाना स्वाभाविक ही है। इन्हीं अशुद्धियों में ''पाठान्तर या पाठभेद'' भी आता है। ''पाठान्तर'' होने में लिपिकार का प्रमाद प्रमुख कारण है, जो कि शब्दों की प्रायः मिलती–जुलती संरचना में भी संभव है। कभी–कभी लिखावट की अस्पृष्टता एवं छपाई दोष के कारण वास्तविक पाठ के दुर्बोध हो जाने पर भी लिपिकार अपनी प्रतिभा (कल्पना) से पाठ शोधन कर देते थे, इसके फलस्वरूप भी पाठान्तर हो जाया करते थे। टीकाकारों ने भी अपने पाण्डित्य प्रदर्शन अथवा स्वाभिमत व्याख्याा करने के लोभ में पाठभेदों की समस्या को और जटिल बना दिया है। यही कारण है कि जिन ग्रंथों में अत्याधिक पाठभेद प्राप्त है, उनका प्रामाणिक (मूल पाठ से युक्त) संस्करण तैयार करना अतीव दुष्कर है।

महाकवि बाणभट्ट कृत हर्षचरित भी पाठभेद से युक्त है। हर्षचरित के टीकाकार शंकर ने संकेत टीका में पाठभेद को उद्धृत किया है।

''संकेत'' टीकाकार शंकर ने अपनी टीका में जिन पाठ भेदों का उल्लेख किये है, वह हर्षचरित के अन्य टीकाकारों के अपेक्षाकृत प्रमाणिक है। शंकर ने महत्वपूर्ण पाठभेदों का ही उल्लेख किया है।

नमस्तुङ्ग शिरचुम्बि चन्द्र चामर चारवे।
त्रैलोक्य नगरारम्भ मूल स्तम्भाय शंभवे।।

उपरोक्त श्लोक का पाठान्तर इस प्रकार है।

जीवानन्द पाठ में प्रथम श्लोक दुष्टव्य है–

चतुर्मुख मुखाम्भोजवन हंसवधूर्मम।
मानते रमतां नित्यं सर्व शुक्ला सरस्वती।। 1/1

टीका		**पाठान्तर**	
हरकण्ठ ग्रहानन्द	–	हरकण्ठाग्रहानन्द	1/2
स्पर्शजात	–	स्पर्शाज्जात	1/2
रागाधिष्ठितदृष्टयः	–	रागाधिष्ठित मूर्तयः	1/4
कामकरिणः	–	कामचारिणंः	1/4
गौडेष्वक्षस्डम्बरम्	–	डम्बरः	1/5
जातिरग्राम्या	–	अग्रास्याः	1/6
विकटाक्षरबंध्यच	–	विकटो	1/6
व्याप्नोति जगत्त्रयम्	–	प्राप्नोति दिगन्तरम्	1/6
शक्त्येव पाण्डु पुत्राणां	–	पुत्रस्य	1/7 (श्लोक)

पदबंधोज्ज्वलोहारी कृत वर्ण क्रम स्थितिः

पाठा. पद बद्वोज्जवलो हारिकृत कण्ठकम् स्थितिः। 1/7

गद्यबन्धो	–	पद्य	1/7
अविनाशिनम्	–	कुविनाशिनम्	1/8
भूमिकैः	–	भूषिकैः	1/8
भातो	–	भासा	1/8
निर्गतासुन का कस्य–		निर्गतसूर वंशस्य (16 श्लोक)	1/8
आद्यराज	–	आद्यं	1/10
घटनोज्ज्वलैः	–	घटनोज्ज्वला, घटितोज्ज्वला	1/10 (18 श्लोक)

ज्यतिज्वलत्प्रताप ज्वलन प्रकार – जयुत्युज्जवलत्प्र, जयज्ज्वलत्प्र 1/11 (21 श्लोक)

सुनासीर	–	शुनासीर	1/12

गीर्वाणैः	–	गीर्वाण गणैः	1/12
ग्रह्योद्याः	–	ग्रह्योदिताः	1/12
महर्षयः	–	महामुनयः	1/12
केचिदपचिति भाज्जि	–	अपि विभाज्जि	1/12
सामानि	–	सामानि	1/12
विवृतक तु	–	विततकतुः	1/12
विवादाः	–	विवाविवादाः	1/12
कलहायमानःसाम	–	सामासायः	1/13
शापभय प्रति	–	शापभवात्प्र.	1/13
नवयौदने वयति	–	नवे वयसि	1/13
स्वभावारूणाभ्यां	–	स्वभावारूण पाद	1/14
जडाद्वितयम्	–	द्वितीयम्	1/14
कुलकलालाप प्रलापिनि	–	कुलकुल, कुलाकला लापप्र	1/14
मेखला दाम्नि	–	धाम्नि	1/14
गुण बलाये नेवां सांव	–	नेवां श्राव	1/14
ग्रहत सूनेण	–	सहज ब्रह्म	1/14
हारमुद्वहन्ती	–	हारमुरतासमु	1/14
पाटलेन	–	पाटलेनेव च	1/15
मथुर गीता	–	सामधुर, सममः प्रतिबिम्बां मधुर	1/15
तिर्यक्सावज्ञनुन्नमितै	–	सावर्णसु	1/15
प्रक्षालयन्ती वापङ्ग	निगतेन तीवङ्ग	विनि	1/15
सिंधु	–	सिन्दु	1/15
कुसुम मधु	–	संसवत मधु बसंस मधु	1/15
शरीरा	–	तनुलता	1/15
विकिरन्तो	–	किरन्ती	1/16
जटाकलापस्य	–	जटासञ्चयस्य	1/16
रोचिषा	–	शोचिषा	1/16
ललाव्यट्टाष्टापदाम	–	ललाटाष्टा पदां	1/16
अक्तकान्तः पुरमण्डन	–	अन्तकमण्डन	1/16
असावस्त्रंतिनः	–	असंस्त्रंतिनः	1/17
स्वेदकण प्रतिः	–	स्वेदं प्रति	1/17

प्रसाद न लग्नाम क्षरमाला मिवाक्ष मालामाक्षिप्य–
पाठाः– प्रसादलग्नाम क्षमालां विक्षिप्यः अक्षरावलि कामिवाक्षरमालां 1/17

समुपस्पृश्य	–	ससमुप	1/17
अभ्याशे	–	अभ्यासे	1/17
दुकूल	–	दुकूल	1/18
बिसतन्तुः	–	विश	1/18
तपोबल निर्जित	–	तपोनिर्जित	1/18
सुधापेन धवलेन	–	पेनय	1/18
गडास्त्रोत सेव	–	शशाष	1/18
वेकक्ष्यका	–	वैकक्षा	1/18
स्फटिक	–	स्फुरि	1/18
दन्तुरितं	–	दन्तुरं	1/18
मुनिखेट अपसद	–	खेटापसद निराकृत	1/18
निराकृत	–	निराकृते	1/18
मनुजवृन्दबन्दनीयां	–	मनुज माननीयां	1/19
मुखरित	–	मुखर	1/19
मुखेरूत्क्षेम	–	आक्षेम	1/19
भरितदिग्भिः	–	आक्षेम	1/19
कृष्णाजिनातोपच्छाया	–	कृष्णाजिनपटच्छा	1/19
कुशतन्तु चामर चीर	–	कुशतन्तु चारू चामर	1/19
प्रतिशाप दानोवतां सावित्रीम्	–	प्रति शापोवतां सावित्री	1/20
रोषम	–	रूषाम्	1/20
इत्यभिदधाना	–	दत्यभिदधती	1/20
अतिभारितोरू भारबहन	–	अतिभारितोरू भागभर	1/40
दूरादेवानतेन	–	तुरयाद् दूरादेवावनतेन	1/60
चलन्त	–	दलन्त	2/114
अकाल प्रावृद्	–	अकाण्ड प्रावृद्	2/117

प्रदक्षिणी क्रियमाणीमिव – मिव गतिलोष्णाया दिवसेन दिव सेन 2/120

अप्रसमद्भि गिरिभिरपि इधमानं	–	भूभूदि, भर्दूयमानं	2/120
चापतोचित	–	चापलोपचित	2/140

कार्तवीर्यो गो ब्राह्मणपि पीडनेने निधनमयस्त्रीत–
पाठाः– इतो अग्रे –'' रामोमनोभव भ्रान्त हृदया जनक तनयामपि।
न परिहतवान् इत्यधिकः पाठः क्वचिटुपलम्भ्यते। 3/152
निशासु मणि प्रदीपाः – निः श्वासमणि प्रदीपाः 3/167

मुचितेन चैनमादरेण	–	मुचितेन न चैनं	3/173
पत्तनं पूतायाः	–	पतनं पूतनायाः	3/178
अनेनैवागमनेन	–	कृतमनेनैवानुगमनेन	3/181
न वाचि	–	न वाचि सताम्	3/193
तस्मिन्नविधवामय	–	तस्मिन्नविधवाधव	4/243
कुब्जिका	–	कुज्जिका इति पाठान्तरम्	5/289

कुष्ययुक्त (7/364) इस वाक्य में श्री वासुदेव शरण

अग्रवाल के अनुसार ''कुप्रयुक्त'' के स्थान पर ''कुप्य युक्त'' पाठ स्वीकार्य है। (ह.सां.अध्य.142–143)

चारूचारभट (7/365)

चारभट के स्थान पर ''चाटभट'' किया है।

(ह.सां.अध्य.142–143)

निष्ठुरकेन – निष्ठेयं 7/374

जल्पाक जिह्घारच शुक – जातीः कौशिक शुक 7/388

बोट – पीत इति 7/408

कोष्ठक युक्त पाठभेदः–

जटाताजि (जटातानि) 1/25

(प्रेख) प्रेड्ख द्दोलापमानम् 1/53

तिरश्चीनं (स्तनयन्ती) 1/65

उर्ध्दवद्वे (बुद्वे) नेति 3/175

वादयतामुपवीणयतामिव– वद (वादय) तामिषति।

वीणयो नगाय तामुपवीण यतामिति। 2/126

संहस्र प्रक्षालित सहत्रेषु तैः प्रक्षालिताशि – (शरी ?) राः 3/178

1. अलवत कर तेनेव पाटलेन इति वा पाठः। 1/15
2. अतिभरितो रूभार वहनेन इति पाठः। 1/40
3. अतिपेशलः इति पाठे पेशलः सुन्दरः। 1/61
4. स्तनन्ती इति वा पाठः। 1/65
5. क्वचित् स्मूतयः इति पाठः। 2/88
6. परिकलित ''परिकरित'' इति पाठे वेष्टित इत्यर्थः। 2/90
7. परिवलिता।''परिवेष्टिता'' इति पाठे व्याप्तेत्यर्थः। 2/124
8. ''प्रभवात्'' इति पाठे। 4/202
9. संहितो रूपो वेदपाठः। 5/65
10. पेटकं तत्समूहः, ''पाठीपति'' इति पाठे पाठीपतयः।7/363
11. वर इति पाठः। 7/365
12. भुवज्चितैः भूचलितैः। भूवाज्चतैः इति पाठे उन्नतैक भूक्षिप्तैरित्यर्थः। 7/372
13. सकर पाठेति प्रसिद्वम्। 7/377
14. मलकुथै इति पाठः। मलकुथा मलपट्टी। 7/379

उपरोक्त वर्णित पाठभेद टीकाकार की टीका से प्रस्तुत हैं जिसमें ''इति पाठः'' ऐसा पाठ किया जाता है, अर्थ से युक्त है।

इसके पश्चात् पाठभेद के प्रतिरूप को और भी विधि से प्रस्तुत किया गया है। साथ ही इसे हम पाठ भेद मानेंगे, जो निम्नांकित है–

1. यथा–श्वेता स्फटिका इत्यन्ते।

केचित्तु ''श्वेतमानैः इति पठन्ति। (2/101)

उपर्युक्त पाठभेद में ''इत्यन्ते'' वं केचित्तु'' के द्वारा पाठान्तर स्पष्ट किया गया है।

अपिश्च– ''इति प्रसिद्वः पाठभेद''

1. भोजको रविमर्चयित्वा, पुजका हि भूयता गगका भवन्ति। ये मगा इति प्रसिद्वः(4/218)
2. तलावा इति प्रसिद्वः। (4/223)
3. गुज्जा संज्ञः शंख भेदो यत्पृष्ठे जतु परिकलितं भाति ''सन्ना'' इति यस्य प्रसिद्वि। शंखश्च भुण्ड्र इति प्रसिद्वः। (7/365)
4. प्रौढिको योग्याशनार्थ प्रसेवको यो ''बुक्कण'' इति प्रसिद्वः (7/365)
5. स्वस्थानं स्वस्थानेति यस्याः प्रसिद्विः (7/367)
6. तयिलां इति प्रसिद्वः। (7/369)
7. पगणितमक्षुविकारः गुह इति प्रसिद्वः (7/375)

पर्याय के अर्थ में पाठभेद दृष्टव्य हैः–

1. दुगूल शब्दो दुकुल समानार्थ। (1/34)
2. विसर शब्द औणादिकः काण्ड पर्यायः। (1/24)
3. परिव्याधः इति पर्याय। (8/418)

भाषागत पाठभेद

1. इन्द्रगोपकः कीट विशेषः (भाषायां ''वीरबहुटी'' अति ख्यातः। 4/211

इस तरह से पाठभेद के कई स्वरूप संकेत टीका में दिखाई पड़ता है। यह शोध टीका पर कार्य करने वाले शोधार्थी के लिए यह महत्वपूर्ण एवं लाभदायक होगा।

संदर्भ

अमरकोश – रामाश्रयी टीका बाणभट्ट का आदान प्रदान डॉ. अमरनाथ पांडेय वाराणसी दिल्ली संस्कृत सा का इतिहास– वाचस्पतिशास्त्री चौखबा प्रकाशन वाराणसी 221001

हर्षचरितम्– महाकवि बाणभट्ट विरचित शंकर कवि यिरचित ''संकेत टीका'' चौखंबा विधा भवन, वाराणासी

हर्षचरितम्– बाणभट्ट संकेत टीका (हिन्दी) आचार्य जगन्नाथ पाठक कृत हिन्दी कथा साहित्य चौखंबा प्रकाशन वाराणसी 221001

हर्षचरितम्– (पंचम् उच्छ्वास) सुधा संस्कृत हिन्दी व्याख्या सहित, रचनाकार श्री शिवनाथ शर्मा, पाण्डेय चौखंबा संस्कृत वाङः मय प्रकाशन वाराणसी

हर्षचरितम्– चून्नीलाल शुक्ल कृत टीका साहित्य चौखंबा प्रकाशन वाराणासी

टीप–बाणभट्ट और उनका हर्षचरित डॉ. महेशचन्द्र भारतीय एक आलोचनात्मक अध्ययन विमल प्रकाशन, गाजियाबाद